५. स्वराज्य की स्थापना

सत्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में महाराष्ट्र में युगप्रवर्तक व्यक्तित्व छत्रपति शिवाजी महाराज का उदय हुआ । उन्होंने यहाँ की अन्यायी राज्यसत्ताओं को चुनौती देते हुए स्वराज्य की स्थापना की । उनका जन्म शके १५५१, फाल्गुन वद्य तृतीया को अर्थात १९ फरवरी, १६३० को पुणे जिले में जुन्नर के समीप शिवनेरी किले में हुआ । इस पाठ में हम उनके द्वारा की गई स्वराज्य स्थापना की जानकारी प्राप्त करेंगे ।

शहाजीराजे

शहाजीराजे : शहाजीराजे शिवाजी महाराज के पिता थे । वे दक्षिण के प्रभावशाली सरदार थे । मुगलों ने निजामशाही को जीतने के लिए अभियान चलाया । इस अभियान में बीजापुर के आदिलशाह ने मुगलों की सहायता की । मुगलों का दक्षिण में प्रवेश हो; यह शहाजीराजे को मान्य नहीं था । अत: उन्होंने मुगलों का प्रखर विरोध कर निजामशाही को बचाने का प्रयास किया परंतु मुगल और आदिलशाही की शक्ति एवं सामर्थ्य के आगे उनकी कुछ न चली । ई.स.१६३६ में निजामशाही की पराजय होकर वह समाप्त हुई ।

निजामशाही का अस्तित्व समाप्त होने के पश्चात शहाजीराजे बीजापुर की आदिलशाही के सरदार बने। शहाजीराजे के आधिपत्य में भीमा और नीरा नदियों के बीच के पुणे, सुपे, इंदापुर और चाकण परगने की जागीर थी । आदिलशाह ने जागीर का यह मूल प्रदेश उनके पास वैसा ही रखा । आदिलशाह ने उन्हें कर्नाटक में बंगलुरु और उसके आसपास का प्रदेश जागीर के रूप में दिया ।

शहाजीराजे वीर, पराक्रमी, धैर्यवान, बुद्धिमान और श्रेष्ठ राजनैतिक थे । वे उत्तम धनुर्धारी थे । साथ ही वे तलवार चलाना, भाला फेंकना और गतका-फरी घुमाना आदि में कुशल थे । उनका प्रजा पर अपार स्नेह था । उन्होंने महाराष्ट्र, कर्नाटक और तमिलनाडु के अनेक प्रदेश जीत लिए थे । दक्षिण भारत में उनकी बड़ी धाक थी । बाल शिवाजी और जिजाबाई बंगलुरु में थे । शहाजीराजे ने बाल शिवाजी को राजा बनने के लिए आवश्यक और योग्य शिक्षा दिलाने का प्रबंध किया । विदेशी लोगों की सत्ता उलट देने तथा स्वराज्य स्थापित करने की उनकी प्रखर इच्छा थी । इसीलिए उन्हें स्वराज्य का संकल्पक कहा जाता है परंतु प्रत्यक्ष में स्वयं के जीवित रहते स्वराज्य की स्थापना करें; ऐसी अनुकूल स्थिति उन्हें प्राप्त नहीं हुई । अपनी इस इच्छा को पूर्ण करने के लिए उन्होंने बाल शिवाजी और जिजाबाई को विश्वसनीय और पराक्रमी सहयोगियों के साथ बंगलुरु से पुणे भेज दिया ।

वीरमाता जिजाबाई : जिजाबाई बुलढाणा जिले के सिंदखेडराजा के पराक्रमी सरदार लखुजीराजे जाधव की कन्या थीं । उन्हें बचपन में ही विभिन्न विद्याओं के साथ-साथ सैनिकी शिक्षा भी प्राप्त हुई थी । शहाजी महाराज का स्वराज्य स्थापना का स्वप्न साकार हो; उसके लिए वे उन्हें निरंतर प्रोत्साहित करती थीं । वे पराक्रमी और दूरदर्शी राजनीतिज्ञ थीं ।

क्या तुम जानते हो ?

जागीर - किसी प्रदेश से आय अथवा राजस्व वसूल करने तथा उसका उपभोग करने के अधिकार को जागीर कहते हैं । शासनकर्ताओं की सेवा में जिन लोगों को सरदार पद प्राप्त होता था; उन्हें नकद राशि के रूप में वेतन न देते हुए वेतन की राशि जितनी आय राजस्व द्वारा उन्हें मिलेगी; इतना प्रदेश दिया जाता था । उसे 'जागीर' कहते थे ।

वीरमाता जिजाबाई

स्वराज्य स्थापना के कार्य में उन्होंने शिवाजी महाराज को निरंतर मार्गदर्शन किया । समय आने पर वे प्रजा की समस्याओं को हल करने के लिए न्याय करने का कार्य भी करती थीं । वे शिवाजी महाराज को उत्तम शिक्षा देने के प्रति जागरूक भी थीं । उन्होंने शिवाजी महाराज को चरित्र, सत्यप्रियता, वाक्पटुता, सजगता, धैर्यशीलता, निर्भयता, शस्त्रप्रयोग, जीतने की आकांक्षा, स्वराज्य का स्वप्न आदि बातों के संस्कार दिए ।

शिवाजी महाराज के सहयोगी : शिवाजी महाराज ने स्वराज्य स्थापना का प्रारंभ मावल क्षेत्र में किया । वर्तमान पुणे जिले की पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम दिशा का क्षेत्र मावल कहलाता है । मावल का क्षेत्र पर्वतीय, खाई-घाटी और दुर्गम क्षेत्र है । शिवाजी महाराज ने मावल की इस भौगोलिक परिस्थिति का उपयोग स्वराज्य स्थापना में बड़ी कुशलता से किया । उन्होंने लोगों के मन में विश्वास और अपनापन की भावना निर्माण की । स्वराज्य स्थापना के इस कार्य में उन्हें विश्वसनीय साथी-सहयोगी मिले । उनमें येसाजी कंक, बाजी पासलकर, बापूजी मुद्गल, नरहेकर देशपांडे बंधु, कावजी कोंढालकर, जिवा महाला, तानाजी मालुसरे, कान्होजी जेधे, बाजीप्रभु देशपांडे, दादाजी नरसप्रभु देशपांडे कुछ नाम हैं । इन साथी-सहयोगियों के बल पर उन्होंने स्वराज्य स्थापना का कार्य हाथ में लिया ।

ध्यान में रखो

बारह मावल : (१) पवना मावल (२) हिरडस मावल (३) गुंजण मावल (४) पौड़ घाटी (५) मुठे घाटी (६) मुसे घाटी (७) कानद घाटी (८) वेलवंड घाटी (९) रोहिड़ घाटी (१०) आंदर मावल (११) नाणे मावल (१२) कोरबारसे मावल ।

शिवाजी महाराज की पुणे जागीर के सह्याद्रि पर्वत की गोद में स्थित प्रदेश मावल घाटी कहलाता है । इसे 'बारह मावल' भी कहते हैं ।

करके देखो

शिवाजी महाराज के सहयोगी जिवा महाला, तानाजी मालुसरे, बाजीप्रभु देशपांडे के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करो ।

राजमुद्रा

राजमुद्रा : स्वराज्य की स्थापना के पीछे शिवाजी महाराज का उद्देश्य उनकी इस राजमुद्रा द्वारा स्पष्ट होता है । इस राजमुद्रा पर निम्न संस्कृत पंक्तियाँ उकेरी गई हैं ।

प्रतिपच्चंद्रलेखेव वर्धिष्णुर्विश्ववंदिता ।।

शाहसूनोः शिवस्यैषा मुद्रा भद्राय राजते ।।

अर्थ : ''शहाजी पुत्र शिवाजी की (शुक्ल पक्ष की) प्रतिपदा के चंद्रमा की कला के समान बढ़ती जानेवाली तथा जिसको संपूर्ण विश्व ने वंदना की है; ऐसी यह मुद्रा (प्रजा के) कल्याण के लिए अधिराज्य चलाती है ।''

मुद्रा पर अंकित इस सुवचन का अर्थ अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है । शिवाजी महाराज के इस सुवचन द्वारा पिता के प्रति कृतज्ञता, स्वराज्य अविरत विस्तार पाएगा; यह विश्वास, मुद्रा अर्थात स्वराज्य के प्रति सभी को प्राप्त होता आदर भाव,

प्रजा के कल्याण के प्रति प्रतिबद्धता और अपनी भूमि पर स्वतंत्रतापूर्वक अधिराज्य चलाने का विश्वास व्यक्त हुआ है । इस लघु सुवचन में स्वराज्य की संकल्पना का सर्वांगीण सार सिमटा हुआ है ।

समझें

- अपने देश की राजमुद्रा का निरीक्षण करो ।
- उसमें कौन-कौन-सी बातें दिखाई देती हैं ?
- राजमुद्रा का उपयोग कहाँ-कहाँ किया गया दिखाई देता है ?

स्वराज्य स्थापना की गतिविधियाँ : शिवाजी महाराज की जागीर में जो किले थे; वे वास्तव में उनके अधिकार में नहीं थे । वे किले/गढ़ आदिलशाही के नियंत्रण में थे । उस समय किलों/गढ़ों का असाधारण महत्त्व था । किला अथवा गढ़ अपने अधिपतित्व में हो तो आस-पास के प्रदेशों पर नियंत्रण रखा जा सकता था । स्थिति यह थी - 'जिसका किला, उसी का राज्य' । शिवाजी महाराज ने अपनी जागीर के किलों को अपने अधिकार में कर लेने का निश्चय कर लिया । किलों को अपने अधिकार में कर लेने का प्रयास करने का अर्थ आदिलशाह की सत्ता को चुनौती देना था । उन्होंने तोरणा, मुरुंबदेव, कोंढाणा, पुरंदर किलों को अपने अधिकार में कर लिया और स्वराज्य की नींव रखी। मुरुंबदेव किले की मरम्मत कर उसका नामकरण 'राजगढ़' किया गया । राजगढ़ स्वराज्य की प्रथम राजधानी बना ।

किला राजगढ़ - पाली दरवाजा

आदिलशाही में जावली के मोरे, मुधोल के घोरपड़े और सावंतवाड़ी के सावंत आदि सरदार थे। इन सरदारों को स्वराज्य स्थापना के प्रति विरोध था। स्वराज्य स्थापना के लिए इन सरदारों को सही रास्ते पर लाना आवश्यक था ।

जावली पर अधिकार : सातारा जिले में जावली नामक स्थान का सरदार चंद्रराव मोरे था । वह आदिलशाह का पराक्रमी सरदार था । उसने स्वराज्य स्थापना के कार्य को विरोध किया । अत: ई.स. १६५६ में शिवाजी महाराज ने जावली पर आक्रमण कर उस प्रदेश को जीत लिया । उसे अपना केंद्र बनाया । इसके बाद रायगढ़ भी जीत लिया । जावली की विपुल संपत्ति उनके हाथ लगी । जावली को जीतने के बाद शिवाजी महाराज ने कोकण में अपनी गतिविधियाँ तेज कर दीं । उन्होंने जावली की घाटी में प्रतापगढ़ किले का निर्माण करवाया । जावली पर विजय प्राप्त करने से उनकी सामर्थ्य में सभी प्रकार से वृद्धि हुई ।

इसके बाद शिवाजी महाराज ने कल्याण और भिवंडी भी जीत लिए । इससे उनका पश्चिमी तट पर बसीं सिद्दी, पुर्तगाली और अंग्रेजी सत्ताओं से आमना-सामना हुआ । यदि इन सत्ताओं से संघर्ष करना है तो हमें शक्तिशाली नौसेना का निर्माण करना होगा; यह उनके ध्यान में आया । अत: उन्होंने नौसेना निर्माण की ओर ध्यान दिया ।

अफजल खान का दमन : शिवाजी महाराज ने अपनी जागीर और आसपास के आदिलशाही प्रदेश के किलों को अपने अधिकार में लेना प्रारंभ किया । वे जावली के मोरे का विरोध कुचल चुके थे । कोकण क्षेत्र में स्वराज्य स्थापना के कार्य को गति प्राप्त हुई थी । ये सभी बातें जैसे आदिलशाही को चुनौती थीं। उस समय आदिलशाही का प्रशासन बड़ी साहिबा चला रही थी । उसे लगने लगा कि शिवाजी महाराज का बंदोबस्त करना चाहिए । इसलिए उसने आदिलशाही के बलवान और अनुभवी सरदार अफजल खान को शिवाजी महाराज पर आक्रमण करने के लिए कहा ।

अफजल खान बीजापुर से चलकर वाई आ

पहुँचा। अफजल खान वाई प्रांत से भली-भाँति परिचित था । वाई के निकट प्रतापगढ़ की तलहटी में १० नवंबर १६५९ को शिवाजी महाराज और अफजल खान की भेंट हुई । इस भेंट में अफजल खान ने शिवाजी महाराज को छल-कपट से हानि पहुँचाने का प्रयास किया। इसलिए उन्होंने अफजल खान को मौत के घाट उतार दिया और आदिलशाही सेना का दमन किया ।

अफजल खान का वध करने के बाद शिवाजी महाराज ने युद्ध में घायल हुए सैनिकों को मानधन दिया। युद्ध में वीरता का प्रदर्शन करने वाले सैनिकों को पुरस्कार दिए । अफजल खान की सेना के जिन सैनिकों और अधिकारियों को शिवाजी महाराज ने बंदी बनाया था; उनके साथ उन्होंने भलमनसाहत का व्यवहार किया ।

सिद्दी जौहर का आक्रमण : अफजल खान का दमन करने के पश्चात शिवाजी महाराज ने आदिलशाही के वसंतगढ़, पन्हाला और खेलणा किले जीत लिए। खेलणा किले को 'विशालगढ़' नाम दे दिया ।

शिवाजी महाराज का बंदोबस्त करने के लिए आदिलशाह ने ई.स.१६६० में करनूल प्रदेश का सरदार सिद्दी जौहर से शिवाजी महाराज पर आक्रमण करने को कहा । उसे 'सलाबत खान' की उपाधि दी । सिद्दी जौहर की सहायता के लिए रुस्तम-ए-जमान, बाजी घोरपड़े और अफजल खान का बेटा फजल खान भी थे । इस स्थिति में शिवाजी महाराज पन्हाला गढ़ में चले गए । सिद्दी की सेना ने लगभग पाँच महीने पन्हाला गढ़ को घेर रखा था । इस घेरे से निकलना शिवाजी महाराज के लिए कठिन हो गया था । नेतोजी पालकर ने बाहर से सिद्दी की सेना पर आक्रमण कर इस घेरे को हटाने का प्रयास किया परंतु उसकी सेना बहुत कम थी । इसलिए यह प्रयास सफल नहीं हुआ। सिद्दी घेरा हटाएगा; ऐसे आसार दिखाई नहीं दे रहे थे । अत: शिवाजी महाराज ने सिद्दी से बातचीत प्रारंभ की । इससे पन्हाला गढ़ का घेरा ढीला पड़ गया। शिवाजी महाराज को इस स्थिति का लाभ प्राप्त हुआ ।

इस स्थिति में गढ़ का शिवा काशिद नामक पराक्रमी युवक आगे बढ़ आया । यह युवक शिवाजी महाराज जैसा दिखाई देता था । उसने शिवाजी महाराज जैसी वेशभूषा धारण की और पालकी में बैठ गया । यह पालकी राजदिंडी दरवाजे से बाहर निकल गई । सिद्दी की सेना ने इस पालकी को पकड़ लिया । यह घड़ी बड़े संकट की थी । शिवा काशिद ने स्वराज्य के लिए अपने प्राणों का बलिदान किया । इसी बीच शिवाजी महाराज दूसरे दुर्गम रास्ते से गढ़ से बाहर निकल गए । उनके साथ बाजीप्रभु देशपांडे और बांदल-देशमुख सहित कुछ चुनिंदा सैनिक थे ।

शिवाजी महाराज पन्हाला गढ़ के घेरे से निकलकर विशालगढ़ की ओर बढ़े । सिद्दी को यह समाचार प्राप्त हुआ । उसकी सेना ने उनका पीछा किया । सिद्दी की सेना को विशालगढ़ की तलहटी में रोकने का दायित्व शिवाजी महाराज ने बाजीप्रभु देशपांडे को सौंपा ।

बाजीप्रभु देशपांडे ने गजापुर के समीप घोड़दर्रा (घोडखिंड) में सिद्दी की सेना को रोका । बाजीप्रभु ने वीरता की पराकाष्ठा की परंतु वह वीरगति को प्राप्त हुआ । उसके सैनिकों ने सिद्दी की सेना को रोककर रखा था । परिणामत: शिवाजी महाराज को विशालगढ़ की ओर बढ़ना संभव हुआ । विशालगढ़ जाते समय शिवाजी महाराज ने पालवन के दलवी और शृंगारपुर के सुर्वे के विरोध का दमन किया । ये आदिलशाही के सरदार थे । इसके बाद शिवाजी महाराज सकुशल विशालगढ़ पहुँच गए ।

जिस समय शिवाजी महाराज पन्हाला गढ़ के घेरे में घिरे हुए थे; उस समय दिल्ली की सत्ता पर आसीन हुए औरंगजेब बादशाह ने मुगल सरदार शाइस्ता खान को दक्षिण में भेजा । उसने पुणे प्रांत पर आक्रमण किया था । उस समय शिवाजी महाराज का आदिलशाही के साथ संघर्ष चल रहा था । इस स्थिति में; दो शत्रुओं के साथ एक ही

समय में युद्ध करना उचित नहीं होगा; यह शिवाजी महाराज के ध्यान में आया । अत: विशालगढ़ पर सकुशल पहुँचने के बाद उन्होंने आदिलशाह के साथ संधि कर ली । इस संधि के अनुसार उन्हें पन्हाला किला लौटाना पड़ा। यहाँ शिवाजी महाराज की स्वराज्य स्थापना का एक चरण पूर्ण हुआ ।

स्वाध्याय

१. समूह में संगति न रखनेवाला शब्द ढूँढ़ो :

(१) पुणे, सुपे, चाकण, बंगलुरु

(२) फलटण के जाधव, जावली के मोरे, मुधोल के घोरपडे, सावंतवाडी के सावंत

(३) तोरणा, मुरुंबदेव, सिंहगढ़, सिंधुदुर्ग

२. चलो लेखन करें :

(१) वीरमाता जिजाबाई द्वारा शिवाजी महाराज को दिए गए संस्कार लिखो ।

(२) शिवाजी महाराज ने स्वराज्य स्थापना का प्रारंभ मावल क्षेत्र से किया ।

३. शिवाजी महाराज के साथी-सहयोगियों की सूची बनाओ ।

४. ढूँढ़ो और लिखो :

(१) शहाजीराजे को स्वराज्य का संकल्पक क्यों कहते हैं ?

(२) शिवाजी महाराज ने नौसेना निर्माण की ओर ध्यान क्यों दिया ?

(३) शिवाजी महाराज ने आदिलशाह के साथ संधि क्यों की ?

(४) शिवाजी महाराज पन्हाला गढ़ से किस प्रकार निकल गए ?

उपक्रम

(१) तुम्हारे देखे हुए किसी किले का वर्णन करो और ऐतिहासिक वास्तु का संरक्षण करने के विषय में तुम क्या उपाय सुझाओगे; यह बताओ ।

(२) खेती का 'सात/बारा' (७/१२) कागज प्राप्त कर पाठ में आए हुए शब्दों के अर्थ समझ लो ।

किला पन्हाला – तीन दरवाजा